डॉ. आशा भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग
एस.आर.ए.पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A. Part-I
(M.I.L.) Hindi

B.A. Part-I General & Subsidiary Hindi

Date:- 16-01-2021

## महादेवी के काव्यगत वैशिष्ट्य

महादेवी वर्मा छायावाद की प्रतिनिधि कवियित्री हैं। अपनी भाविकता, आत्मीयता और चित्रात्मकता के कारण उनके गीत छायावाद की विशिष्ट निधि हैं। महादेवी का काव्य कई संग्रहों में संग्रहीत है। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा' उनके स्वतंत्र काव्य संग्रह हैं। 'सन्धिनी' में महादेवी द्वारा अपने समग्र कृतित्व से चुने गए पैंसठ गीतों को संकलित किया गया है।

महादेवी वर्मा के काव्य की केन्द्रीय संवेदना वेदना की है। उनके काव्य में वेदना का आनन्द, वेदना का सौंदर्य और वेदना के लिए आत्म-समर्पण है। महादेवी वर्मा अपने वेदना भाव का संबंध एक ओर बुद्ध के दर्शन के प्रभाव से जोड़ती हैं तो दूसरी ओर अपने जीवन में दुःख और अभावों की कमी से। महादेवी की वेदना का उत्स तो लौकिक ही है, पर आगे चलकर उसका उदात्तीकरण हो गया है।

महादेवी वर्मा के गीतों में वेदना-भाव का निरन्तर विकास हुआ है। 'रश्मि' के गीतों में वह अधीरता लिए है, परन्तु 'निरजा' और 'सान्ध्यगीत' तक आते-आते वह 'शान्त, स्निग्ध और कोमल' हो जाता है —

विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली,
मैं नीर भरी दुःख की बदली!

महादेवी वर्मा के काव्य में व्यक्त प्रणयानुभूति या वेदनानुभूति में रहस्यवाद की उपस्थिति भी दिखाई देती है। भावनात्मक रहस्यवाद की स्थितियों को उनके गीतों में भी दिखाई देता है।

रहस्यवाद का प्रथम सोपान है - सृष्टि के कार्य-व्यापार के पीछे क्रियाशील, इस संसार को चलाने वाली शक्ति में आस्था। यह आस्था आरंभ में विस्मय और जिज्ञासा-भाव के रूप में सामने आती है। उदाहरण हेतु 'रश्मि' की पंक्तियाँ -

"कनक के दिन मोती सी रात,
सुनहली साँझ, गुलाबी प्रभात.
मिटाता रँगता बारम्बार,
कौन यह जग का चित्राधार?"

रहस्यवाद के दूसरे सोपान पर साधक को उपरोक्त शक्ति का आभास प्रकृति के प्रत्येक वस्तु में होने लगता है। महादेवी के यहाँ भी ऐसा ही है -

"रवि शशि तेरे अवतंस बोल,
सीमंत जटिल तारक अमोल"

रहस्यवाद का तीसरा सोपान आते ही साधक अपना संबंध असीम सत्ता से जोड़ने लगता है। महादेवी वर्मा कहती हैं -

"प्रिय चिरन्तन है सजनि,
क्षण-क्षण नवीन सुहागिनी मैं"

इस प्रकार महादेवी वर्मा के काव्य में रहस्यवाद के सभी सोपानों के दर्शन होते हैं। यह रहस्यवाद शुष्क नहीं है, बल्कि अनुभूति की तरलता के कारण बहुत मार्मिक है।

अन्य छायावादी कवियों से भिन्न महादेवी को प्रकृति के शांत, सौम्य, रम्य, मोहक तथा रौद्र रूपों ने आकृष्ट किया है। महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति के दृश्यों विशेषतः उषा, संध्या, रात्रि, रश्मि, हिमालय आदि के अनेक स्वतंत्र दृश्य चित्र मिलते हैं। प्रभातकालीन शोभा का वर्णन द्रष्टव्य है -

"-चुभते ही तेरा अरुण बान
बहते कण-कण से फूट फूट
मधुर के निर्झर से सजल गान-..."

महादेवी की काव्य-भाषा में ध्वन्यात्मकता, सरसता, मौलिकता एवं चित्रोपमता का गुण विद्यमान है। लक्षणा एवं व्यंजना के सौंदर्य से ओत-प्रोत महादेवी की काव्य भाषा सरस, परिष्कृत एवं प्रभावोत्पादक है।